मौखिक

क. बाबा नंद के घर का आँगन सोने से बना है जिसमें मणियाँ जड़ी हैं।

ख. अपने साथ दूसरे बच्चे के भ्रम में ही वे अपनी परछाईं पकड़ रहे हैं।

ग. माता यशोदा कृष्ण की बाललीला, उनकी बालसुलभ क्रीड़ाओं और उनके सुंदर रूप पर मोहित हैं।

घ. छात्रों को पंक्तियाँ चुनकर उच्च स्वर में पढ़ने को कहें।

i. जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे कौ सब कछु दरसाई।
बहिरौ सुनै, गूँग पुनि बौले, रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार-बार बंदौ तिहिं पाई॥

ii. कबहुँ निरखि हरि आपु छाँह कौं कर सौं पकरन चाहत,
किलकि हँसत साजति द्वैं दतियाँ, पुनि-पुनि तिहिं अवगाहत

लिखित

क. कवि सूरदास प्रभु के चरणों की वंदना करते हैं। वे श्री कृष्ण के प्रताप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उनकी कृपा से अपंग पर्वत पार करने में और अंधा सब कुछ देखने में समर्थ हो जाता है। बहरा सुनने लगता है, गूँगा बोलने लगता है तथा कंगाल राजा बनकर सिर पर छत्र धारण करके चलता है।

ख. सूरदास ने प्रभु को करुणामय इसलिए कहा है क्योंकि वे हर व्यक्ति का दुख-दर्द दूर कर देते हैं।

ग. सरलार्थ में से लिखें।

घ. माता यशोदा कृष्ण की बाल लीला देखकर प्रसन्न होती हैं और अपनी प्रसन्नता कृष्ण के पिता नंदबाबा से बाँटना चाहती हैं। इसलिए उन्हें पुकारती हैं। वे कृष्ण को आँचल से ढककर दूध पिलाती हैं, ताकि कृष्ण के सुंदर सलौने रूप को किसी की नज़र न लगे।

ङ. सरलार्थ में से लिखें।

सही विकल्प चुनकर ✓ लगाइए—

क. सूरदास जी किसकी वंदना करते हैं? ✓ कृष्ण के चरणों की

ख. यशोदा बार-बार किसे बुला रही हैं? ✓ नंद को

ग. कृष्ण का प्रतिबिंब कहाँ पड़ रहा है? ✓ नंद के मणियोंवाले आँगन में

मूल्यपरक प्रश्न

किसी विचार, मान्यता या मूल्य के प्रति अटूट विश्वास का भाव ही दृढ़-आस्था है। ईमानदारी, सत्य, अहिंसा, परोपकार, त्याग, दया, उद्यम, नैतिकता, सहयोग, संतोष आदि महान जीवन-मूल्यों के प्रति मेरे मन में दृढ़-आस्था है।